बी० ए० पार्ट–2 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अतिथि व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com.

नौका विहार का भावार्थ

सुमित्रानंदन पंत कोमल भावनाओं के कवि है। उनके काव्य में प्रकृति की सुंदरता और कोमलता मुख्य स्थान पाती है। यह कविता गुंजन की उन कविताओं में से है जिन्हें पन्त जी की उत्कृष्ट रचना माना जाता है। इस कविता का वर्ण्य विषय असाधारण है जिसे प्रकृति का लिबास पहनाकर तथा आध्यात्मिकता का पुट देकर कवि ने बहुत ही सरस और बहुत ही गंभीर बना दिया है। भावपक्ष और कलापक्ष की दृष्टि से यह कविता सफल एवं उत्कृष्ट रचना है।

कवि ने चांदनी रात में सुशोभित होती हुई गंगा के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया है। चंद्रमा की चांदनी से सुशोभित होकर आकाश शांत, तरल और उज्ज्वल दिखायी पड़ता है। उसमें जो तारे चमक रहे है। वे मानो उस असीम आकाश के असंख्य नेत्र है, जिनसे वह अपलक नेत्रों से आँखों को निरन्तर खोलकर पूर्ण शान्ति से मुक्ति पृथ्वी को देख रहा है। इस समय बालू की शैय्या दूध के समान सफेद, दुर्बल (पतले) अंगों वाली गंगा लेटी हुई है। जिसका यह पतलापन ग्रीष्मऋतु के कारण है। बालू पर बहती हुई गंगा ऐसी प्रतीत होता है। मानों वह गर्मी के कारण थकी तथा दुःखी होकर निश्चल रूप से बालू की शैय्या पर लेटी हुई है। गंगा तपस्वियों की बाला की तरह निर्मल है; अर्थात् जिस प्रकार किसी तपस्वी की पुत्री का हृदय सांसारिक कलुषित भावनाओं से दूर रहकर सात्विक भावों के कारण निर्मल होता है। उसी प्रकार गंगा का जल भी निर्मल है। चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब ऐसा दिखायी देता है, मानो वह गंगा–रूपी रमणी का सुन्दर मुख हो। इस चन्द्रमुख की शोभा से उसकी धारा–रूपी हथेलियाँ आलोकित हो रही है। अर्थात् चाँदनी से गंगा की धाराएँ और भी अधिक चमक रही है। उसकी लहरें मानों उसके कोमल केश हैं जो अधिक लम्बे होने के कारण खुलकर उसके हृदय पर लहरा रहे है।

कहने का भाव यह है कि आकाश तारों से भरा हुआ है। यह मानों नीला और महीन वस्त्र है। तारों से भरे हुए आकाश का प्रतिबिम्ब गंगा के जल में पड रहा है, मानो

गंगा–रूपी बाला इस नीले और महीन वस्त्र को धारण किए हुए है। जिससे उसके शरीर की कान्ति झलक रही है। गंगा की लहरें जब मन्द–मन्द चलने वाली वायु के साथ हिलती है तो साथ ही प्रतिबिम्बित आकाश भी हिलने लगता है। यही गंगा के अंचल का लहराना है। गंगा की लहरों पर चन्द्रमा की जो चांदनी छिटकी हुई है। छोटे दीपकों को अपने चंचल अंचल की ओट में करके लहरे पल–पल लुकती–छिपती फिर रही है।

कहने का भाव यह है कि चंचल लहरों पर पड़े हुए तारों के बिम्ब ऐसा महसूस होता है कि मानों उन्हें बुझने से बचाने के लिए लहरें उन्हें बुझने से बचाने के लिए लहरें उन्हें इसी प्रकार, अपने अंचलों में छिपाये हुए है। जिस प्रकार युवतियाँ दीपकों को बुझने से बचाने के लिए अपने अंचलों में छिपा लेती है। सामने ही शुक्र तारे की शोभा झिलमिल करती हुई चमक रही है। वह झिलमिलाती हुई शोभा पानी में इस प्रकार दिखायी देती है, जैसे–कोई सुन्दर परी जल में अपने सुनहले केशों में स्वयं को छिपाकर तैर रही हो। दशमी का चन्द्रमा अपने टेढे मुख को मुग्धा नायिका की तरह रूक–रूककर तथा लहरों के घूँघट में उसे छिपा–छिपाकर दिखा रहा है। कवि ने उस दृश्य का वर्णन भी मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। जब उसकी नौका गंगा की धाराओं के बीच में पहुंच जाती है। चंचल लहरों के कारण चंचल बनी हुई हमारी नाव अब बीच धारा में पहुंच गई। उस समय स्थान का अधिक अन्तर न होने के कारण, चांदनी के कारण चमकता हुआ गंगा का किनारा आंखों से ओझल हो गया था। दूर स्थित होने से किनारे दो बाहुओं की भाँति धारा पतले एवं कोमल शरीर का आलिंगन करने के लिए अधीर से दिखाई दे रहे है। बहुत दूर, क्षितिज पर खड़ा हुआ वृक्षों का मालाकार समूह भौह की तरह टेढ़ा–सा दिखायी देता था। तारों से भरा आकाश ऐसा प्रतीत होता था, मानों वह तारे–रूपी अपने असंख्य नीले नेत्रों से ओर निर्निमेष दृष्टि से विशाल भू मण्डल को देख रहा हो। जिस प्रकार माँ के हृदय के पास उसका शिशु सोया रहता है। उसी प्रकार, उस धारा के पास एक द्वीप था। जिससे टकरा कर लहरों से भरा गंगा का प्रवाह विपरीत दिशा को बहने लगता था। वह आकाश में उड़ रहा पक्षी कौन है? क्या वह विरह से व्याकुल कोक पक्षी है जो जल में पड़ी हुई अपनी ही छाया को अपनी प्रेयसी कोकी समझकर अपने विरह शोक से छुटकारा पाने के लिए उड़कर उसके पास जाना चाहता है?

कहने का भाव यह है कि जो पक्षी आकाश में उड़ रहा है।

कवि ने अपनी नौका विहार का समाप्ति का वर्णन किया है–नाव का बोझ हल्का होने से अब हमने पतवार घुमा दिया और हमारी नाव विपरीत दिशा की ओर घूम गई। चलती हुई नौका ऐसी प्रतीत होती थी मानो डॉडों की चंचल हथेलियाँ फैलाकर और उनमें फेन–समूह रूपी मोतियों को भरकर वह उन्हें जल में बिखराकर उनके तारों के हार बनाने लगी। रेखाओं की भाँति और तरलता और सरलता से खिच–खिचकर चाँदी के साँपों जैसी चंचल किरणें जल में चमकती हुई नाच रही थी। लहर–रूपी बेलों में चन्द्रमा और तारों के रूप में

असंख्य फूल खिलकर फेनों से भरे हुए जल में विलीन हो रहे थे। अब गंगा नदी का प्रवाह गहरा न रह गया था।

अतः हम आसानी से लग्गी से पानी की थाह लेते हुए उत्साह के साथ धार की ओर बढ़ चले। कवि ने नौका विहार को आध्यात्मिक रूप देकर उसका दार्शनिक विवेचन किया है। जैसे–जैसे नाव किनारे पर लगती जाती है। त्यों –त्यों अनेक प्रकार के विचार हृदय में उत्पन्न होती है। जिसकी गति और सागर से मिलन चिंरतन है। उसी प्रकार, विश्व भी इस धारा के समान है। जिसमें लहरों की भाँति असंख्य जीवों का जन्म होता है, जो सदैव गतिशील रहते है और अन्त में उनका ब्रहम् से मिलन भी अवश्यम्भावी है। जिस प्रकार आकाश का नीलापन चन्द्रमा की चाँदी–जैसी श्वेत हंसी(चाँदनी) और लघु लहरों की आनन्दमयी क्रीड़ाएँ चिरन्तन है, उसी प्रकार जीवन की सुख–दुख और उल्लासमयी क्रियाएँ भी; इस संसार में सदैव विद्यमान रहती है। हे जगत् और जीवन के अंर्तयामी भगवान जीवन और मरण के आर–पार जीवन का नौका विहार भी शाश्वत है। अर्थात् जन्म के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जन्म जीवन का अटल धर्म है। नौका विहार के आनन्द में मैं तो अपनी सता को ही भूल बैठा, मुझे अपनी भी सुध नहीं रही, किन्तु यह तो जीवन का चिरन्तन प्रमाण है। अर्थात् यही जीवन का वास्तविक रूप प्रस्तुत करता है और मुझे अमरत्व प्रदान करता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कवि ने बड़ी कुशलता से जीवन की नौका विहार का दार्शनिक रूप दे दिया है, लेकिन यह दार्शनिकता काव्यमयी है जिसमें निरी शुष्कता नहीं है। अद्वैतवादी दर्शन के अनुसार मृत्यु के उपरांत आत्मा ब्रहम् में लीन हो जाती है और यह तल्लीनता उसे अमरता प्रदान करती है।